RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल-011/2015-17

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 72 अंक : 27
सृष्टि संवत् 1960853116
4 अक्तूबर 2015
दयानन्दाब्द 189
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष-72, अंक : 27, 1/4 अक्तूबर 2015 तदनुसार 18 आश्विन सम्वत् 2072 मूल्य 2 रु० , वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

दरिद्र की पूजासामग्री

-ले० श्री स्वामी वेदानंद जी (दयानन्द) तीर्थ

नहि मे अस्त्यघ्न्या न स्वधितिर्वनन्वति। अथैतादृग्भरामि ते।।
यदग्ने कानि कानि चिदा ते दारूणि दध्मसि। ता जुषस्व यविष्ठ्य।।

-ऋ० ८।१०२।१९, २०

शब्दार्थ-नहि-न तो **मे**-मेरे पास **अस्ति**-है **अघ्न्या**-गौ और **न**-न ही **वनन्वति**-वनों को छेदन करने वाला **स्वधितिः**-कुल्हाड़ा है। **अथ**-तो मैं **एतादृग्**-ऐसा ही, रिक्तहस्त ही **ते**-तुझे **भरामि**-धारण करता हूं। **हे अग्ने**-अग्ने! **यत्**-जो **कानि कानि + चित्**-कैसी भी **दारूणि**-लकड़ियां **ते**-तुझमें **आ+दध्मसि**-हम धारण करते हैं, **हे यविष्ठ्य**-अत्यन्त बलशालिन्! **ताः**-उनको **जुषस्व**-स्वीकार करो।

व्याख्या-अग्निहोत्र करने का नित्य विधान है। देखो अथर्ववेद-

सायंसायं गृहपतिर्नो अग्निः प्रातःप्रातः सौमनसस्य दाता।
वसोर्वसोर्वसुदान एधि वयं त्वेन्धानास्तन्वं पुषेम।।
प्रातःप्रातर्गृहपतिर्नो अग्निः सायंसायं सौमनसस्य दाता।
वसोर्वसोर्वसुदान एधीन्धानास्त्वा शतंहिमा ऋधेम।।

-अथर्व०१९।५५।३-४

गृह में स्थापित अग्नि प्रति सायं और प्रति प्रातः सुख का दाता है, नानाविध धनों का धाता है। इसको प्रदीप्त कर हम शरीर को पुष्ट करें, तथा सौ वर्ष फूलें-फलें।

अग्निहोत्र करने के लिए निम्नलिखित पदार्थों की अपेक्षा होती है-समिधा (लकड़ी) घृत, सामग्री (जिसमें जौ, चावल, खांड, शक्कर, नानाविध औषधि आदि सम्मिलित हैं), यज्ञकुण्ड, यज्ञपात्र, दियासलाई आदि। घृत दूध के बिना नहीं बन सकता, दूध गौ आदि के बिना नहीं मिल सकता। लकड़ी वृक्षों से मिल सकती है, किन्तु काटने के लिए कुल्हाड़ा चाहिए।

एक अत्यन्त दरिद्र मनुष्य भगवान् से कहता है-

नहि मे अस्त्यघ्न्या न स्वधितिर्वनन्वति।

मेरे पास गौ नहीं है और वनों को छेदन करने वाला कुल्हाड़ा भी नहीं है।

गौ न होने से यज्ञनिष्पादक घृत का मेरे पास अभाव है। मैं इतना दरिद्र हूं कि लकड़ी काटने को कुल्हाड़ा भी मेरे पास नहीं है। भगवन्! मैं अग्निहोत्र कैसे करूं ? सचमुच बड़ी विकट समस्या है। वेद से भी यज्ञों की नित्य कर्त्तव्यता प्रतीत होती है। मनुजी भी इसे नित्य बतलाते हैं। यथा-

ऋषियज्ञं देवयज्ञं भूतयज्ञं च सर्वदा। नृयज्ञं पितृयज्ञं च यथाशक्ति न हापयेत्।।

-४।२१

ऋषियज्ञ (ब्रह्मयज्ञ), देवयज्ञ (अग्निहोत्र), भूतयज्ञ (बलिवैश्वदेवयज्ञ), नृयज्ञ (अतिथियज्ञ) तथा पितृयज्ञ को यथाशक्ति सदा करे, कभी न छोड़े। श्रुति-स्मृति जिनका करना नित्य बतला रहे हैं, सामग्री न होने पर उनका अनुष्ठान कैसे किया जा सकेगा ? इस चिन्ता से भक्त कहता है-

'यदग्ने कानि कानि चिदा ते दारूणि दध्मसि। ता जुषस्व यविष्ठ्य-जैसी-कैसी भी लकड़ियां हम डालें, उन्हें स्वीकार करो। वेद से अभिप्राय स्पष्ट है कि जैसी-कैसी समिधाओं से हवन कर दो। नहीं मिली बिल्व, खदिर की समिधाएं तो न सही। जङ्गल से गिरी-पड़ी लकड़ियां बीनकर लाओ और यज्ञ कर दो। भगवान् उन्हें स्वीकार करेंगे, अर्थात् धर्म-कार्य में दरिद्रता बाधक नहीं होनी चाहिए।

एक बात बहुत गम्भीर कही है-'नहि मे अस्त्यघ्न्या' मेरे पास गौ नहीं है।

गौ यज्ञ का प्रधान साधन है। वैदिक धर्म यज्ञ का धर्म है। उसके निर्वाह के लिए प्रत्येक वैदिक के घर में गौ का होना आवश्यक है। पीछे एक मन्त्र दिया जा चुका है कि उत्तम भोजन तो वही मनुष्य करता है जिसके घर में अपनी दुधारू गौ है, अर्थात् अग्निहोत्र की बात तो जाने दो, शरीर की आग को व्यवस्थित रखने के लिए भी गौ की आवश्यकता है।

-स्वाध्याय संदोह से साभार

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। हमारा हर संभव प्रयास होता है कि इस पत्रिका में उच्च कोटि के विद्वानों के सारगर्भित लेख प्रकाशित कर आर्य समाज तथा महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों के अनुसार प्रचार करते हुये आम जनता तक इसका लाभ प्राप्त हो। लेकिन यह तभी संभव है जब आप सब का हमें पूरा सहयोग मिले। इसलिये आर्य मर्यादा के ग्राहकों से निवेदन है कि जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा।

-व्यवस्थापक आर्य मर्यादा

चार पुरुषार्थों की संक्षिप्त व्याख्या

-ले० खुशहाल चन्द्र आर्य गोविन्द राम आर्य एण्ड सन्स, 180 महात्मा गांधी रोड कोलकत्ता

ईश्वर जब जीव को उसके कर्मानुसार धरती पर मनुष्य योनि में भेजता है तब उसको चार पुरुषार्थ करने का आदेश देता है, जिससे वह अच्छे कर्म करते हुए, अपने कर्त्तव्यों का भली-भांति पालन करते हुए तथा अपने जीवन को और दूसरों के जीवन को सुखी बनाते हुए अपने अन्तिम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त कर सके, जिसकी प्राप्ति के लिए ईश्वर ने जीव को मनुष्य योनि में भेजा था। कारण मनुष्य योनि से ही जीव मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। यही योनि मोक्ष प्राप्ति की अन्तिम योनि है। पुरुषार्थ चार हैं, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। वैसे देखा जाए तो मोक्ष कोई पुरुषार्थ नहीं कारण यह तो धर्म, अर्थ, काम इन तीनों पुरुषार्थों का फल है, परिणाम है। पर कहने के लिए इसे भी पुरुषार्थ ही कह देते हैं। परन्तु यह पुरुषार्थ कैसे हो सकता है। कारण पुरुषार्थ में तो कर्म करना पड़ता है परन्तु मोक्ष में तो जीव को कोई काम नहीं करना पड़ता। वह तो केवल ईश्वर के सान्निध्य में रहते हुए सब किस्म के आनन्द को प्राप्त करता रहता है जिसे परम आनन्द कहते हैं। पहले के विद्वान मोक्ष यानि मुक्ति की कोई अवधि नहीं मानते थे। उनका कहना था कि मुक्ति का अर्थ ही होता है, हमेशा के लिए जीवन मरण से मुक्त हो जाना यानि मुक्ति मिलने के बाद फिर कभी भी जन्म नहीं लेना होता। परन्तु महर्षि दयानन्द का मानव-मात्र पर यह एक बहुत बड़ा उपकार है कि उन्होंने मुक्ति की भी एक अवधि बताई है। महर्षि का कहना है कि जिन अच्छे कर्मों से मुक्ति मिली है, जब उन अच्छे कर्मों के करने की कोई अवधि होती है तो उसके फल के रूप में मिली मुक्ति की भी अवधि होनी ज़रूरी है चाहे वह कितनी भी लम्बी हो। इसी आधार पर महर्षि जी ने वेदों से जानकर मुक्ति या मोक्ष की अवधि 31 नील 10 खरब 40 अरब वर्ष की मानी है।

पुरुषार्थ के बारे में यह बताना उचित है कि पुरुषार्थ का तात्पर्य है कि किसी काम को कर्त्तव्य व परोपकार की भावना से पूरे मनोयोग के साथ तथा पूरे साहस और उत्साह के साथ किसी काम को किसी अच्छे उद्देश्य के लिए करना ही पुरुषार्थ है। पुरुषार्थ बुद्धिपूर्वक व सात्विक भाव से ही होता है। इसलिए केवल मनुष्य को ही पुरुषार्थ करने की आवश्यकता है। पशु-पक्षी, कीट-पतंग, वृक्षादि को नहीं कारण ये सब केवल भोग योनियां हैं। इनके किए हुए कर्मों का फल हमको नहीं मिलता। ये योनियां केवल स्वाभाविक कर्म ही करती है। यानि सोना-जागना, उठना-बैठना, खाना-पीना और सन्तान पैदा करना आदि। इन कर्मों में पुरुषार्थ करने की कोई आवश्यकता नहीं। परन्तु मनुष्य योनि ही एक ऐसी योनि है जो भोग योनि के साथ-साथ कर्म योनि भी है। इसको अपने किए हुए अच्छे या बुरे कर्मों का फल ईश्वर की न्याय व्यवस्था के द्वारा अच्छे कर्मों का फल सुख के रूप में और बुरे कर्मो का फल दु:ख के रूप में मिलता है। इसलिए ईश्वर ने मनुष्य को अन्य जीवों की अपेक्षा अधिक बुद्धि दी है, जिससे वह चिन्तन मनन करके यानि अच्छे-बुरे की जांच करके अच्छे कर्म करे और बुरे काम न करे ताकि वह अच्छे काम करके मोक्ष पाने का अधिकारी बन सके। मनुष्य एक ऐसा प्राणी है जिसमें स्वाभाविक ज्ञान कम और नैमित्तिक ज्ञान अधिक होता है, इसलिए मनुष्य सिखाने से सीखता है। बिना सिखाए मनुष्य पशुवत् ही रह जाता है। सिखाने के उद्देश्य से ही ईश्वर ने मनुष्यों के लिए सृष्टि के आदि में वेद ज्ञान दिया जिसको सुन कर या पढ़कर वह यह जान सके कि अच्छे कर्म क्या हैं ? और बुरे कर्म क्या हैं ? यह जानने के बाद मनुष्य अच्छे काम करता हुआ तथा अपना और दूसरों के जीवन को सुखी व खुशहाल बनाते हुए अन्त में मोक्ष को प्राप्त कर सके। जीव मनुष्य योनि प्राप्त करके ही वेद पढ़ सकता है और उनके अनुसार चल कर मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। इसके अतिरिक्त मोक्ष प्राप्त करने का कोई मार्ग नहीं। इसलिए प्रत्येक मनुष्य का कर्त्तव्य है कि वह मनुष्य योनि पाकर और वेदानुकूल चलकर अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए अन्त में मोक्ष को प्राप्त करे। बाकी तीन पुरुषार्थ इसी भांति है।

1. धर्म-धर्म का तात्पर्य है कि गुणों को धारण करना जिनके धारण करने से उसको स्वयं को सुख व लाभ होता हो साथ ही दूसरों को भी सुख व लाभ मिलता है। जैसे ईमानदारी, सत्य बोलना, किसी को धोखा न देना, निष्पक्ष बात कहना, दया, करुणा, परोपकार आदि। इन गुणों को अपनाने से मनुष्य को स्वयं को द्वेष, घृणा, हिंसा, बेईमानी, झूठ बोलना, किसी को धोखा देना आदि अधर्म हैं। इनको अपनाने से मनुष्य स्वयं दु:खी होता है तथा अन्यों को भी दु:ख पहुंचाता है। धर्म मनुष्य के लिए बहुत ज़रूरी है, इससे उसकी आत्मा पवित्र होती है और दूसरों का उसके ऊपर विश्वास जमता है। आजकल लोगों ने सही धर्म को न समझकर केवल बाहरी चिन्हों तथा आडम्बरों व पाखण्डों को धर्म मानकर धर्म का रूप विकृत कर दिया है। हमारे पौराणिक भाई तो केवल मन्दिर में दिन में दो बार जाकर किसी देवी या देवता के दर्शन मात्र को ही धर्म मान बैठा है। बाकी समय वह कितना भी पाप कर्म करे उसके देवता उसे माफ कर देगा और उसे पाप कर्म करने की छूट मिल जाएगी। इसी भांति हमारे मुस्लिम भाई भी मानते हैं कि दिन में पांच बार नमाज पढ़ लो और ईद पर तीस दिन रोजे रख लो बाकी फिर वह चाहे जितना भी पाप कर्म करें, अल्लाह उसे क्षमा कर देगा और मरने के बाद उसे जन्नत (स्वर्ग) में भेज देगा। इसी प्रकार ईसाई भाई मानते हैं कि आप एक बार ईसा पर विश्वास ले आओ फिर वह जितने भी पाप कर्म करेगा, ईसा उसको गोड् (ईश्वर) से सिफारिश करके पापों से मुक्त करवा देगा और उसे स्वर्ग में स्थान दिलवा देगा। लोगों ने धर्म को इतना सस्ता बना दिया है जिससे भोले लोग सस्ते धर्म की ओर झुक जाते हैं और अधर्म के कार्यों में लिप्त हो जाते हैं। महर्षि दयानन्द का मानव मात्र पर यह इतना बड़ा उपकार है कि उन्होंने सच्चे धर्म के स्वरूप को वेदों से जानकर भटके हुए लोगों के सामने रखा जिसमें ईश्वर की सच्ची उपासना, सन्ध्या, यज्ञ व अष्टांग योग है, जिनके द्वारा मनुष्य अपने जीवन को पवित्र बनाकर ही मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। इसके अतिरिक्त अन्य विश्वासों में अपने जीवन को नष्ट करना है।

2. अर्थ-पुरुषार्थ में अर्थ यानि धन का दूसरा स्थान है। वेद कहता है कि धन चाहे कितना भी कमाओ लेकिन धर्म के साथ कमाना चाहिए। धर्म से कमाया हुआ धन ही अर्थ है, नहीं तो सब अनर्थ है। धर्म से धन कमाने का तात्पर्य है कि सच्चाई, ईमानदारी व परोपकार की भावना व कर्त्तव्य भाव से धन कमाना चाहिए। आप कोई भी काम करो, चाहे व्यापार हो, चाहे खेती हो, चाहे नौकरी हो या अन्य कोई सेवा कार्य हो। सभी को धर्म व कर्त्तव्य का ध्यान रखते हुए करना चाहिए। उसमें किसी का भी अहित नहीं होना चाहिए। धर्म के साथ ही धन कमाना सच्चा पुरुषार्थ है जो मनुष्य को मुक्ति की ओर ले जाता है।

3. काम-काम का तात्पर्य विषय-भोगों के साथ-साथ सभी कामनाएं यानि इच्छाएं भी धर्म के अनुसार होनी चाहिए। विषय-भोग समय पर केवल अच्छी सुयोग्य सन्तान राष्ट्र को देने के उद्देश्य से करना चाहिए। अच्छी व सुयोग्य सन्तान यदि आप राष्ट्र को देंगे तो राष्ट्र सदैव उन्नत व समृद्धशाली बनता जाएगा और मानवता का भी उद्धार होगा। मनुष्य को अपने शरीर की आवश्यकताएं कम से कम रखनी चाहिए और परिश्रम अधिक से अधिक करना चाहिए तभी 'काम' को सच्चा पुरुषार्थ कर सकेंगे। इस प्रकार आप यदि तीनों पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम को धर्म की भावना यानि परोपकार की भावना कर्त्तव्य परायण होकर इच्छा और कामनाओं में बिना लिप्त हुए त्याग भाव से जीवन में कार्य करोगे तो मोक्ष मिलना निश्चित हैं। वेद भी हमें मन्त्र द्वारा यही शिक्षा देता है।

''तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा: मा गृधः कस्य स्विद्धनम्।''

सम्पादकीय......

संस्कारी सन्तान का निर्माण करना माता-पिता का कर्त्तव्य

संसार में दो प्रकार के माता-पिता होते हैं। एक वह जो अपने हाथों से सन्तान को अमृत पिलाते हैं और दूसरे वह जो अपने हाथों से सन्तान को विष पिलाते हैं। अब प्रश्न पैदा होता है कि अमृत पिलाने वाले माता-पिता कौन से हैं? जो बच्चों को बचपन से ही अच्छे संस्कार देना प्रारम्भ कर देते हैं। यदि बच्चा कोई कुचेष्टा करता है, या अनावश्यक जिद्द करता है तो वह बालक को दण्ड देने में जरा भी संकोच नहीं करते, जो अपने बच्चों की प्रत्येक गतिविधि पर नजर रखते हैं, उसके द्वारा किए कार्य की समीक्षा करते हैं, ऐसे माता पिता अपनी संतानों को अमृत पिलाते हैं। उनकी संतानें फिर कुमार्ग पर नहीं जाती और सदा सुमार्ग पर चलने के लिए प्रयत्नशील रहती हैं। प्रायः देखा जाता है कि वह अधिकतर परिश्रमी और पुरूषार्थी हुआ करती है और शिक्षाकाल में उन्नति की चरम सीमा पर पहुंचती हैं। ऐसी संतानें न केवल माता पिता का नाम रोशन करती हैं बल्कि देश के लिए भी उनका जीवन प्रशंनीय होता है और वे देश के अच्छे नागरिक बनकर देश की उन्नति और तरक्की में अपना योगदान देते हैं। धन्य हैं ऐसे माता-पिता जो बच्चों के निर्माण करने में अपनी सब सुख सुविधाओं को त्याग कर अपना जीवन साधनामय बनाते हैं। ऐसे माता-पिता अपनी दिनचर्या ऐसी बनाते हैं जो संतान के लिए प्रेरणादायक बन जाती है। संतान व्यवहार की सभी बातें जैसे समय पर सोना जागना, समय पर अपने सभी कार्य सम्पन्न करना, खान-पान पर ध्यान देना आदि सभी बातें संतान पर प्रभाव डालती हैं।

लोग अक्सर कहा करते हैं कि बच्चे हमारा कहना नहीं मानते और अपनी मनमानी करते हैं। उन लोगों से मैं पूछना चाहता हूं कि उन्होंने बच्चों के निर्माण के लिए कौन सा कष्ट सहन किया है, कौन से अच्छे संस्कार उन्होंने संतानों को दिए हैं, उनकी दिनचर्या को कैसा बनाया है? जिस माता-पिता का जीवन और उनकी दिनचर्या नियमित नहीं होती, जो भोग विलास में पड़कर अपना जीवन बिताते हैं। ऐसे माता-पिता की संतान कभी संस्कारी नहीं बन सकती। ऐसे माता-पिता बाद में पछताते हैं जब उनकी संतान उनके कहने से बाहर हो जाती है। मातृमान्, पितृमान्, आचार्यवान् पुरूषो वेद अर्थात् जब उत्तम शिक्षक अर्थात् पहले माता, दूसरे पिता और तीसरे आचार्य मिल जाए तभी बच्चा जीवन के हर क्षेत्र में सफलता को प्राप्त करता है। वे कुल धन्य हैं जिनके माता पिता धार्मिक और विद्वान् हैं। जितना माता से संतानों को लाभ पहुंचता है उतना और किसी से नहीं क्योंकि बच्चों का जीवन प्रभात मात की गोद में गुजरता है। वास्तव में बच्चे की शिक्षा तो गर्भाधान से ही आरम्भ हो जाती है। माता को अति उचित है कि गर्भाधान काल में अपनी दिनचर्या, अपना खान-पान ऐसा बनाएं जिससे गर्भ के अन्दर बच्चे के ऊपर अच्छे संस्कार पड़े। संतान जो कुछ भी है, वह अपने माता पिता के आचार विचार, आहार, व्यवहार और संस्कार का प्रतिबिम्ब है। माता-पिता के आचर विचार का प्रभाव संतान पर अवश्य पड़ता है। माता चाहे तो बालक को शूरवीर, धीर, गम्भीर, धर्मात्मा, विचारशील, विद्वान्, बना सकती है और अगर माता चाहे तो उसको कायर, मूर्ख और अज्ञानी बना सकती है। दूसरे शब्दों में कहें तो बालक की प्रवृत्ति माता ही बनाती है। यदि माता अपने उत्तरदायित्व को समझ जाए तो संसार के सभी संकट दूर हो सकते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के संस्कारविधि में बताए हुए निर्देशों का पालन करें तो ऐसी ही गुणवान् और श्रेष्ठ लक्षणों से युक्त संतान पैदा हो सकती है। सुख देने वाली संतान के विषय में यजुर्वेद में एक मन्त्र आया है कि जो माता-पिता अपने पुत्रों और कन्याओं को ब्रह्मचर्य उपदेश के साथ वेद विद्या और उत्तम शिक्षा से युक्त करते हैं, वे उनके शरीर और आत्मा के बल को बढाने वाले होते है और संतानों के लिए अत्यन्त हितकारी होते हैं। ऐसे माता-पिता की संतानें अपने माता-पिता को सुखयुक्त करती हैं।

नीतिकार ने बहुत ही सुन्दर कहा है कि वह माता बच्चे की शत्रु है और पिता वैरी है जो अपनी संतानों को अच्छी शिक्षा नहीं देते हैं, अच्छे गुणों से युक्त नहीं करते हैं। ऐसी संतान विद्वानों के बीच में ऐसे ही शोभा नहीं पाती है जैसे हंसों के बीच में बगुला शोभा नहीं पाता है। इसलिए माता-पिता का दायित्व है कि वे अपनी संतानों को उत्तम संस्कार देकर उन्हें सुयोग्य और विद्वान् बनाएं। ऐसे -ऐसे सुन्दर उपदेश माता और पिता को बच्चों को देने चाहिए ताकि सन्तान सदा आज्ञाकारी रहे। माता-पिता को बच्चे के प्रत्येक कार्य पर नजर रखनी चाहिए, उसकी अच्छी और बुरी आदतों का पता करना चाहिए और उसका सुधार करने के लिए सकारात्मक कदम उठाने चाहिए। बच्चों की किसी भी गलती को अनदेखा नहीं करना चाहिए। जो माता-पिता अपने बच्चों की छोटी-छोटी गलतियों से किनारा कर लेते हैं वे बाद में पछताते हैं। बच्चों और विद्यार्थियों का जीवन बड़ा पुरूषार्थ और निरालस्य होना चाहिए। कष्टों के पहाड़ उपर गिरने पर भी सहनशीलता को प्राथमिकता देनी चाहिए। संघर्ष का दूसरा नाम ही विद्यार्थी जीवन है। जो माता-पिता विद्यार्थी काल से अपने बच्चों का जीवन संघर्षमय बनाते हैं, उन्हें मेहनत का जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं वही बच्चे आगे चलकर महान् बनते हैं और अपने लक्ष्य की ऊँचाईयों को प्राप्त करते हैं। संसार में जितने भी महापुरूष हुए हैं उन्होंने अपने जीवन में संघर्ष किया है, कठिन पुरूषार्थ किया है तभी इतने वर्षों के बाद भी हम उनके जीवन से प्रेरणा लिया करते हैं। ऐसे महापुरूषों का जीवन हमारे लिए प्रकाश स्तम्भ बन जाता है। जो माता पिता बच्चों का जीवन सुखमय बना देते हैं, उनमें परिश्रम करने की आदत नहीं डालते वही बच्चे आलसी होते हैं और किसी भी कार्य को करने से घबराते हैं, उनके अन्दर आत्मविश्वास की कमी होती है। ऐसे बच्चे अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकते।

इसलिए माता-पिता का कर्त्तव्य है कि वे अपनी सन्तानों को आत्मविश्वासी बनाएं। उनके अन्दर मेहनत करने की, पुरूषार्थ करने की भावना कूट-कूट कर भरें ताकि वे विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्य को बनाएं रखे। यह माता पिता का परम कर्त्तव्य है कि वह अपनी संतानों को कैसा बनाना चाहती है? माता-पिता जिस प्रकार का अपने बच्चों को बनाना चाहते हैं वैसे ही उन्हें स्वयं भी बनना होगा। माता-पिता की जीवन बच्चों के लिए प्रेरणा व आदर्श बन जाए, ऐसा उन्हें प्रयत्न करना चाहिए। जो माता पिता संतान का निर्माण करना अपना कर्त्तव्य समझते हैं वही सन्तान आज्ञाकारी, गुणवान, और धार्मिक बनती है और जो अपने इस कर्त्तव्य की अवहेलना करते हैं उन्हें बाद में पछताना पड़ता है। आज की इस परिस्थिति में सभी माता-पिता अपने-अपने कर्त्तव्य को समझे और अपनी सन्तानों को उत्तम, चरित्रवान, धार्मिक, गुणवान और आज्ञाकारी बनाएं।

-प्रेम भारद्वाज, संपादक एवं सभा महामन्त्री

भगवान और ईश्वर शब्द की परिभाषा

-ले० पंडित उम्मेद विशारद वैदिक प्रचारक गढ़निवास मोहकमपुर देहरादून

प्राचीन इतिहास अवलोकन से ज्ञात होता है कि महाभारत काल तक भारत वर्ष में एक निराकार ईश्वर की प्रार्थना व स्तुति होती थी, और यज्ञ प्रधान काल था। महाभारत युद्ध के बाद वैदिक विद्वान, आचार्यों की क्षति होने के कारण अज्ञान व अन्धविश्वासों का जाल फैलने लगा। जनसाधारण वैदिक धर्म व सिद्धान्तों को भूलने लगे और अवसरवादी लोगों ने अपने-अपने मतों की दुकानें खोल दी। जनसाधारण में उच्च संस्कारों व राष्ट्र भक्ति की कमी आने लगी। और ईश्वर के नाम से धार्मिक अन्धविश्वास, रूढ़ी सामाजिक परम्पराएं बुरी तरह से फैलने लगी। चारों ओर अराजकता व अमानुष्य के संस्कार फैलने लगे। मन्दिरों में महापुरुषों की मूर्तियां लगाकर महापुरुष भगवानों को ईश्वर मानकर पूजने लगे। बस यहीं से संसार में तथाकथित भगवानों की बाढ़ आने लगी और जनसाधारण सत्य ईश्वर से विमुख होने लगे। फलस्वरूप आज सारा संसार अराजकता, उग्रवाद, अनाचार, द्वेष के बारूद के ढेर पर बैठा है।

भगवान की परिभाषा-

ऐश्वर्यस्य समग्रस्य धर्मस्य यशस श्रयः।

ज्ञानेवैराग्योश्चैव षण्णां भग इतीरणाः।।

1. अर्थात्ः सम्पूर्ण ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री ज्ञान, वैराग्य इन छः का नाम भाग है भगवान का पहला गुण सम्पूर्ण ऐश्वर्य-जिसके पास जितने अधिक भग है, वह भगवान कहलाता है, किन्तु जिसके पास ऐश्वर्यों का अभाव होता है वही सम्पूर्ण ऐश्वर्यों को पुरुषार्थों से प्राप्त करता है, जैसे श्रीराम व श्रीकृष्ण के पास सम्पूर्ण ऐश्वर्य थे। किन्तु जो संसार में जन्म मृत्यु को प्राप्त होता है उसी को उक्त भग प्राप्त करने पड़ते हैं। इसलिए उनको भगवान कहते हैं। वह ईश्वर नहीं हो सकते हैं।

ईश्वर-ईश्वर के गुण, कर्म और स्वभाव और स्वरूप सत्य है जो केवल चैतन्य वस्तु है तथा जो एक अद्वितीय, सर्वशक्तिमान, निराकार, सर्वव्यापक अनादि, आदि सत्य गुण वाला है जिसका स्वभाव, अविनाशी, ज्ञानी, आनन्दी, शुद्ध, न्यायकारी, दयालु और अजन्मा आदि है। जिसका कार्य जगत की उत्पत्ति, पालन और विनाश करना है, सब जीवों को पाप पुण्य के फल ठीक-ठीक पहुंचाता है। जो सदैव ऐश्वर्ययुक्त है, और जगत के प्राणियों को ऐश्वर्य देने वाला है और स्वयं ग्रहण नहीं करता, अपितु कराता है उसे ईश्वर कहते हैं। जन्म नहीं लेता अपितु जन्म देता है।

नोट-ईश्वर की यह व्याख्या सम्पूर्ण लेख के कलेवर में समझने की प्रार्थना है।

2. भगवान शब्द का दूसरा गुण धर्म-धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः-जो सत्यवादी मनुष्य ईश्वरीय गुण कर्म स्वभाव और वेदों की शिक्षा के आधार पर धर्म मानना और पदार्थ के गुण कर्मानुसार मानना व प्राणी मात्र के साथ अनुकूल व्यवहार करना तथा जीवन के अन्दर सत्य आचरण, सत्य पुरुषार्थ, सत्य प्रभु भक्ति व सृष्टि कर्मानुसार व्यवहार और सत्य असत्य, धर्म-अधर्म, पाप पुण्य व कृत्य-अकृत्य को सत्य की कसौटी पर परख कर चलता हैं तथा जैसे परमात्मा द्वारा प्राणी मात्र पर उपकार किए जा रहे हैं वैसे ही प्राणी मात्र के साथ करना सदैव सत्य मार्ग पर चलना। यह भगवान का दूसरा भग है जो केवल मनुष्य रूपी उत्तम पुरुष में ही घट सकते हैं।

ईश्वर-ईश्वर सारे संसार का रचयिता है तथा ईश्वर ने प्रत्येक पदार्थ जड़ व चैतन्य में गुण विशेष दिए हैं जो सूर्य, अग्नि, वायु, जल, अन्न, फल, वनस्पति और मानव की रचना आदि क्रियाओं का गुण धर्म एक जैसे रहते हैं। इनके गुण धर्म में कभी परिवर्तन नहीं होता। अपितु अपरिवर्तन शील गुण है, यही ईश्वरीय धर्म कहलाता है। जो प्राणी मात्र के कल्याण के लिए है। इसलिए ईश्वर कहता है जो मनुष्य रूपी भगवान नहीं कर सकते है अपितु ईश्वरीय गुणों के सहारे जीते हैं।

भगवान का तीसरा भग यश है-यश और अपयश देहधारी मनुष्यों में ही घट सकते हैं। संसार में जिस महापुरुष ने अपने सात्विक कर्मों द्वारा, वेदानुकूल और ईश्वरीय गुण कर्म धर्मानुसार जन कल्याण किए हो उसको यश चारों ओर फैलता है। यह मनुष्यों में ही घट सकता है। इसलिए भगवान रूपी मनुष्य का तीसरा भाग है।

ईश्वर-ईश्वर निर्विकार है और सर्व शक्तिमान है, सर्वन्तर्यामी है, सृष्टि रचयिता है। मानव को कर्मानुसार फल प्रदान करता है। अतः ईश्वर यश और अपयश से ऊपर है। ईश्वर सदैव ऋत यश में रहता है।

भगवान का चौथा भग/श्री है-महापुरुष संसार में जन्म लेकर जितना-जितना, वेदानुकूल, सृष्टि क्रमानुसार सत्य धर्म, सत्य, कर्म, सत्य ईश्वर भक्ति और जनता को सन्मार्ग दिखाना, परोपकार आदि गुणों से उसे संस्कार में ''श्री'' प्राप्त होती है अर्थात् श्रेष्ठता प्राप्त होती है। यह गुण केवल मनुष्य पर ही घट सकते हैं जिस पर यह गुण आ जाते हैं उसे भगवान कहते हैं।

ईश्वर-ईश्वर निर्विकार है और शक्तिमान है और सर्वाधिकार है, सर्वगुण सम्पन्न है और सर्वोत्तम है। सारे ब्रह्माण्ड का रचयिता है, कालतीत है और श्री और निन्दा के गुणों के ऊपर है। सदैव कल्याणकारी होने से सदैव ऋत ''श्री'' ही है इसलिए उसे ईश्वर कहते हैं।

भगवान का पांचवा गुण ज्ञान है-मानव जन्म होते ही अज्ञानी रहता है और विद्या अध्ययन से ही ज्ञान प्राप्त करता है और संसार में अपने विवेक से, भविष्य, वर्तमान का ज्ञान प्राप्त करता है और अपने ऊंचे ज्ञान से संसार के प्राणियों का अज्ञान मिटाना है उसे भगवान कहते हैं।

ईश्वर-ईश्वर सृष्टिकर्त्ता है जो सत्य विद्या और पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं। उन सबका आदि मूल परमेश्वर है और सदैव, भूत, भविष्य व वर्तमान से ऊपर रहता है जो सर्वान्तर्यामी है उसे ईश्वर कहते हैं, जो मनुष्य रूपी भगवान में नहीं घट सकते हैं।

भगवान का छटा गुण वैराग्य है-मनुष्य रूपी महापुरुष संसार में जन्म तो लेते हैं किन्तु कर्म मुक्त अर्थात् कर्म बन्धन मोह माया में नहीं फंसते। सदैव त्याग और परोपकार की भावना से कार्य करते हैं। संसार के विषयों से उपराम रहते हैं। जीवन और मृत्यु के रहस्य को समाप्त कर रोग मुक्त रहते हैं। इसलिए संसार उन्हें भगवान कहते हैं।

ईश्वर-ईश्वर निर्विकार और अनादि है तथा विकार रहित है सूक्ष्म से सूक्ष्म है। राग और वैराग्य से रहित है। प्राणी मात्र की आत्मा में संसार चक्र चलाने के लिए राग व वैराग्य उत्पन्न करने वाला है इसलिए उसे ईश्वर कहते हैं।

धयानाकर्षण

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने अमूल्य ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में कहीं भी एक शब्द भगवान नहीं लिखा है अपितु ईश्वर व परमात्मा तो जगह-जगह है तथा सम्पूर्ण आर्ष ग्रन्थों में भी ईश्वर व परमात्मा शब्द ही लिखा है।

आर्य उपदेशकों से निवेदन

प्रायः जनसाधारण में प्रचलित ईश्वर के लिए भगवान शब्द का प्रयोग आर्य उपदेशक भी करते रहते हैं। जबकि सम्पूर्ण वेदों में और वेदानुकूल आर्ष ग्रन्थों में कहीं पर भी ईश्वर के लिए भगवान नहीं लिखा है। अतः हमें बड़ी सावधानी से उपदेश करते समय ईश्वर या परमात्मा शब्द का प्रयोग ईश्वर के लिए करना चाहिए और महापुरुषों के लिए भगवान शब्द का प्रयोग करना उचित है। इसलिए संसार, राम, कृष्ण, हनुमान या अन्य देवताओं की तो जय बोलता है किन्तु ईश्वर की जय कोई नहीं कहता है क्योंकि ईश्वर जय विजय से ऊपर है और सदैव ऋत सत्य है।

ईश्वर को प्राप्त करने की सरल विधि क्या है

-ले० मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला रोड, देहरादून

प्रत्येक व्यक्ति सरलतम रूप में ईश्वर को जानना व उसे प्राप्त करना चाहता है। हिन्दू समाज में अनेकों को मूर्ति पूजा सरलतम लगती है क्योंकि यहां स्वाध्याय, ज्ञान व जटिल अनुष्ठानों आदि की आवश्यकता नहीं पड़ती। अन्य मतों की भी कुछ-कुछ यही स्थिति है। अनेक मत वालों ने तो यहां तक कह दिया कि बस आप हमारे मत पर विश्वास ले आओ, तो आपको ईश्वर व अन्य सब कुछ प्राप्त हो जाएगा। बहुत से भोले-भाले लोग ऐसे मायाजाल में फंस जाते हैं परन्तु विवेकी पुरुष जानते हैं कि यह सब मृगमरीचिका के समान हैं। जब रेगिस्तान की भूमि में जल है ही नहीं तो वह वहां प्राप्त नहीं हो सकता। अतः धार्मिक लोगों द्वारा भोले-भाले अनुयायियों को बहकाना एक धार्मिक अपराध ही कहा जा सकता है। दोष केवल बहकाने वाले का ही नहीं, अपितु बहकने वाले का भी है क्योंकि वह संसार की सर्वोत्तम वस्तु 'ईश्वर' की प्राप्ति के लिए कुछ भी प्रयास करना नहीं चाहते और सोचते हैं कि कोई उसके स्थान पर तप व परिश्रम करे और उसे उसका पूरा व अधिकतम लाभ मिल जाए। ऐसा पहले कभी न हुआ है और न भविष्य में कभी होगा। यदि किसी को ईश्वर को प्राप्त करना है तो पहले उसे उसको उसके यथार्थ रूप में जानना होगा। उस ईश्वर व जीवात्मा के यथार्थ स्वरूप को जानकर या फिर किसी सच्चे विद्वान अनुभवी वेदज्ञ गुरू का शिष्य बनकर उससे ईश्वर को प्राप्त करने की सरलतम विधि जानी जा सकती है। इस ईश्वर व जीवात्मा को जानने व ईश्वर को प्राप्त करने की सरलतम विधि कौन सी है और उसकी उपलब्धि किस प्रकार होगी ? इसका प्रथम उत्तर है कि इसके लिए आपको महर्षि दयानन्द व आर्य समाज की शरण में आना होगा। महर्षि दयानन्द ने वेदों के आधार पर अपने ग्रन्थों में ईश्वर, जीवात्मा व प्रकृति के सत्य व यथार्थ स्वरूप का वर्णन किया है जिसे स्वयं पढ़कर जानना व समझना है। यदि यह करने पर जिज्ञासु को कहीं किंचित भ्रान्ति होती है तब उसे किसी विद्वान से उसे जानना व समझना है। उपासक को महर्षि दयानन्द की उपासना विषयक मान्यताओं व निर्देशों को अच्छी तरह से समझ कर पढ़ना व अध्ययन करना चाहिए। इस कार्य में महर्षि दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, आर्याभिविनय, पंच महायज्ञ विधि, आर्योद्देश्यरत्नमाला, व्यवहारभानु आदि पुस्तकें सहायक हो सकती हैं। आईए इसी क्रम में ईश्वर, जीवात्मा, जीवात्मा को ईश्वर के उपकारों से उऋण होने तथा जन्म मरण से मुक्ति के लिए ईश्वर की उपासना करनी है। अतः इन दोनों सत्ताओं के सत्य स्वरूप उपासक को विदित होने चाहिए नहीं तो भ्रान्तियों में पड़कर उपासक सत्य मार्ग का चयन नहीं कर सकता। पहले ईश्वर का वेद वर्णित स्वरूप जान लेते हैं। सत्यार्थ प्रकाश के 'स्वमन्तव्य-अमन्तव्य प्रकाश' में महर्षि दयानन्द ने ईश्वर के स्वरूप व गुण, कर्म स्वभाव पवित्र हैं। जो सर्वज्ञ, निराकार, सर्वव्यापक, अजन्मा, अनन्त, सर्वशक्तिमान, दयालु, न्यायकारी, सब सृष्टि का कर्त्ता, धर्त्ता, हर्त्ता सब जीवों को कर्मानुसार सत्य न्याय से फलदाता आदि लक्षणयुक्त हैं, उसी को परमेश्वर मानता हूं।'' ईश्वर के इस स्वरूप का उपासक को बार-बार विचार करना चाहिए और एक-एक गुण, कर्म, स्वभाव व लक्षण को तर्क-वितर्क कर अपने मन व मस्तिष्क में अच्छी तरह से स्थिर कर देना चाहिए। जब इन गुणों का बार-बार विचार, चिन्तन व ध्यान करते हैं तो इसी को उपासना कहा जाता है। उपासना की योग निर्दिष्ट विधि के लिए महर्षि पतंजलि का योग दर्शन भी पूर्ण सावधानी, तल्लीनता व ध्यान से पढ़ना चाहिए जिससे उसमें वर्णित सभी विषय व बातें बुद्धि में स्थित हो जाएं। ऐसा होने पर उपासना व उपासना की विधि दोनों का ज्ञान होना चाहिए।

जीव का स्वरूप कैसा है? आईए, इसे ईश्वर के गुण, कर्म व स्वभाव के आधार पर निश्चित कर लेते हैं। ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप है तो जीव भी सत्य व चेतन स्वरूप वाला है। ईश्वर में सदैव आनन्द का होना उसका नित्य, शाश्वत व अनादि गुण है परन्तु जीव में आनन्द नहीं है। यह आनन्द जीव को ईश्वर की उपासना, ध्यान व चिन्तन से ही उपलब्ध होता है। उपासना का प्रयोजन भी यही सिद्ध होता है कि ईश्वरीय आनन्द की प्राप्ति व उसकी उपलब्धि करना। ईश्वर के गुण, कर्म व स्वभाव पवित्र है परन्तु जीव को ज्ञान के लिए माता-पिता व आचार्य के साथ वैदिक साहित्य के अध्ययन की आवश्यकता होती है, तब यह कुछ-कुछ पवित्र बनता है। वह मनुष्य भाग्यवान है कि जिसके माता-पिता व आचार्य धार्मिक हों व वैदिक विद्या से अलंकृत हों। धार्मिक माता-पिता व आचार्य के सान्निध्य व उनसे शिक्षा ग्रहण कर ही कोई मनुष्य पवित्र जीवन वाला बन सकता है, अन्यथा नहीं। हमारा आजकल का समाज इसका उदाहरण है। जिसमें माता-पिता व आचार्य धार्मिक व वैदिक विद्वान नहीं है और इसी कारण समाज में भ्रष्टाचार, अनाचार व दुराचार आदि देखें जाते हैं। आजकल के माता-पिता व आचार्य स्वयं सत्य व आध्यात्मिक ज्ञान से हीन है, अतः उनकी सन्तानों व शिष्यों में भी सत्य वैदिक आध्यात्मिक ज्ञान नहीं आ पा रहा है। इसका हमें एक ही उपाय व साधन अनुभव होता है और वह महर्षि दयानन्द व वेद सहित प्राचीन ऋषि मुनियों के ग्रन्थों एवं वेदागों, उपांगों अर्थात् 6 दर्शन तथा 11 उपनिषदों सहित प्रक्षेप रहित मनुस्मृति आदि का अध्ययन है। इन्हें पढ़कर मनुष्य ईश्वर, जीवात्मा व संसार से संबंधित सत्य ज्ञान को प्राप्त हो जाता है। महर्षि दयानन्द ने ईश्वर को वेद के आधार पर सर्वज्ञ, निराकार, सर्वव्यापक, अजन्मा, अनन्त, सर्वशक्तिमान, दयालु, न्यायकारी, सब सृष्टि का कर्त्ता, धर्त्ता, हर्त्ता सब जीवों को कर्मानुसार सत्य न्याय के फलदाता आदि लक्षणयुक्त बताया है।

इस पर विचार करने से जीवात्मा अल्पज्ञ, सूक्ष्म एकदेशी बिन्दुवत आकार वाला, सर्वव्यापक ईश्वर से व्याप्त, अनुत्पन्न, अल्पशक्तिमान, दया-न्याय गुणों से युक्त व मुक्त दोनों प्रकार के स्वभाव वाला, ईश्वरकृत सृष्टि का भोक्ता और ज्ञान व विज्ञान से युक्त होकर अपनी सामर्थ्य से सृष्टि के पदार्थों से नाना प्रकार के उपयोगी पदार्थों की रचना करने वाला, कर्म करने में स्वतन्त्र परन्तु उनके फल भोगने में ईश्वर की व्यवस्था के अधीन आदि लक्षणों वाला जीवात्मा है। इस प्रकार से विचार करते हुए हम जीवात्मा के अन्य गुणों को भी जान सकते हैं क्योंकि हमारे सामने कसौटी वेद, आप्त वचन व ईश्वर का स्वरूप आदि हैं तथा विचार व चिन्तन करने की वैदिक चिन्तन पद्धति है। सृष्टि में तीसरा महत्त्वपूर्ण पदार्थ प्रकृति है जो कारणावस्था में अत्यन्त सूक्ष्म तथा सत्व, रज व तम गुणों की साम्यावस्था है। ईश्वर इसी प्रकृति को अपनी सर्वज्ञता, सर्वव्यापकता, सर्वशक्तिमत्ता से पूर्व कल्पों की भांति रचकर स्थूलाकार सृष्टि करता है जिसमें सभी सूर्य, ग्रह व पृथिवी तथा पृथिवीस्थ सभी भौतिक पदार्थ सम्मिलित हैं।

अब ईश्वर को प्राप्त करने की विधि पर विचार करते हैं। ईश्वर को प्राप्त करने के लिए जीवात्मा को स्तुति, प्रार्थना सहित सन्ध्या-उपासना कर्मों व साधनों को करना है। महर्षि दयानन्द ने दो सन्ध्या कालों, रात्रि व दिन तथा दिन व रात्रि की सन्धि के कालों में सन्ध्या-उपासना को करने के लिए सन्ध्योपासना की विधि भी लिखी है जिसको जानकर सन्ध्या करने से लाभ होता है। (शेष पृष्ठ 6 पर)

पृष्ठ 5 का शेष-ईश्वर को प्राप्त.....

इस पुस्तक की उन्होंने संक्षिप्त भूमिका दी है। सन्ध्या के मन्त्र व उनके अर्थ देकर उन्होंने जो सन्ध्या करने का विधान लिखा है, उसे सभी मनुष्यों को नियतकाल में यथावत करना चाहिए। सन्ध्या व अन्य नित्य कर्मों, दैनिक अग्निहोत्र, पितृ यज्ञ, अतिथि यज्ञ एवं बलिवैश्वदेव यज्ञ को करने का फल यह है कि ज्ञान प्राप्ति से आत्मा की उन्नति और आरोग्यता होने से शरीर के सुख से व्यवहार और परमार्थ कार्यों की सिद्धि का होना। इससे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष सिद्ध होते हैं। इनको प्राप्त होकर मनुष्यों का सुखी होना उचित है। सन्ध्या के समापन से पूर्व समर्पण का विधान करते हुए उपासक को ईश्वर को सम्बोधित कर सच्चे हृदय से कहना होता है कि हे ईश्वर दयानिधे! भवत्कृपयाऽनेन जपोपासनादिकर्मणा धर्मार्थकाममोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः।' इसका अर्थ कर वह कहते हैं कि सन्ध्या के मन्त्रों व उनके अर्थों से परमेश्वर की सम्यक उपासना करके आगे समर्पण करें कि हे ईश्वर दयानिधे! आपकी कृपा से जो-जो उत्तम काम हम लोग करते हैं, वह सब आपके समर्पण हैं। हम लोग आपको प्राप्त होके धर्म अर्थात् सत्य व न्याय का आचरण, अर्थ अर्थात् धर्म के पदार्थों की प्राप्ति, काम अर्थात् धर्म और अर्थ से इष्ट भोगों का सेवन तथा मोक्ष अर्थात् सब दुःखों से छूटकर सदा आनन्द में रहना, इन चार पदार्थों की सिद्धि हमको शीघ्र प्राप्त हो। मोक्ष जन्म व मरण के चक्र से छूटने को कहते हैं। मोक्ष की पहली शर्त है कि उपासना व सत्कर्मों को करके ईश्वर का साक्षात्कार करना व जीवनमुक्त जीवन व्यतीत करना। बिना ईश्वर का साक्षात्कार किए मोक्ष व जन्म मरण से मुक्ति प्राप्त नहीं होती। अतः गौण रूप से समर्पण में यह भी कहा गया है कि ईश्वर हमें अपना दर्शन व साक्षात्कार कराए और हम जन्म-मरण से मुक्त भी हों। ईश्वर का साक्षात्कार होने पर मनुष्य जीवनमुक्त का जीवन व्यतीत वेद ईश्वरीय ज्ञान है जो ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा को दिया था।

ईश्वरीय ज्ञान वेद के हम 3 मन्त्र पाठकों के अवलोकनार्थ प्रस्तुत कर रहे हैं। यह तीनों मन्त्र ऋग्वेद के दसवें मण्डल के हैं। मन्त्र हैं- 'अहम्भुवं वसु नः पूर्व्यस्पतिरहं धनानि संजयामि शश्वतः। मां हवन्ते पितरं न जन्तवोऽहं दाशुषे विभजामि भोजनम्।।''

दूसरा मन्त्र 'अहमिन्द्रो न पराजिग्य इद्धनं न मृत्यवेऽवतस्थे कदाचन। सोममिन्मा सुन्वन्तो याचता वसु न मे पूर्वः सख्ये रिषाथन।'' तीसरा मन्त्र 'अहं दां गृणते पूर्व्य वरवहं ब्रह्म कृणवं मह्यं वर्धनम्। अहं भुवं यामानस्य चोदितायज्वनः साक्षि विश्वरिमन्भरे।'' इन तीनों मन्त्रों के अर्थ हैं प्रथम मन्त्र ईश्वर सबको उपदेश करता है कि हे मनुष्यों! मैं ईश्वर सब के पूर्व विद्यमान सब जगत् का पति हूं। मैं सनातन जगत्कारण और सब धनों का विजय करने वाला और दाता हूं। मुझ ही को सब जीव, जैसे पिता को सन्तान पुकारते हैं, वैसे पुकारें। मैं सबको सुख देने हारे जगत् के लिए नाना प्रकार के भोजनों का विभाग पालन के लिए करता हूं। मैं परमैश्वर्यवान् सूर्य के सदृश सब जगत् का प्रकाशक हूं। कभी पराजय को प्राप्त नहीं होता और न कभी मृत्यु को प्राप्त होता हूं। मैं ही जगत् रूप धन का निर्माता हूं। सब जगत् की उत्पत्ति करने वाले मुझ ही को जानो। हे जीवो! ऐश्वर्य प्राप्ति के यत्न करते हुए तुम लोग विज्ञानादि धन को मुझ से मांगो और तुम लोग मेरी मित्रता से पृथक मत होओ। हे मनुष्यों! मैं सत्यभाषणरूप स्तुति करने वाले मनुष्य को सनातन ज्ञानादि धन को देता हूं। मैं ब्रह्म अर्थात् वेद का प्रकाश करने हारा और मुझको वह वेद यथावत् कहता, उससे सबके ज्ञान को मैं बढ़ाता, मैं सत्पुरुष का प्रेरक, यज्ञ करने हारे को फल प्रदाता और इस विश्व में जो कुछ है उस सब कार्य का बनाने और धारण करने वाला हूं। इसलिए तुम लोग मुझ को छोड़कर किसी दूसरे को मेरे स्थान में मत पूजो, मत मानो और मत जानो। इन मन्त्रों को प्रस्तुत करने का हमारा अभिप्रायः पाठकों को कुछ वेद मन्त्रों व उनके अर्थों से परिचित कराना है।

सृष्टि की सबसे महत्त्वपूर्ण वस्तु ईश्वरीय ज्ञान वेद का सभी को मनुष्य जब ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व ध्यान-उपासना करते हुए ईश्वर में मग्न हो सकता है तो समाधि के निकट होता है। कालान्तर में ईश्वर की कृपा होती है और जीवात्मा को ईश्वर का प्रत्यक्ष व साक्षात्कार होता है। इसका वर्णन करते हुए उपनिषद में कहा गया है कि जिस पुरुष में समाधियोग से अविद्यादि मल नष्ट हो गए हैं, जिसने आत्मस्थ होकर परमात्मा में चित को लगाया है, उसको जो परमात्मा के योग का सुख होता है, वह वाणी से कहा नहीं जा सकता। क्योंकि उस आनन्द को जीवात्मा अपने अन्तःकरण से ग्रहण करता हूं। उपासना शब्द का अर्थ समीप्स्थ होना है। अष्टांग योग से परमात्मा के समीपस्थ होने और उस को सर्वव्यापी, सर्वान्तर्यामीरूप से प्रत्यक्ष करने के लिए जो-जो काम करना होता है, वह वह करना चाहिए। यहां हम पुनः दोहराना चाहते हैं कि उपासना में सफलता के लिए महर्षि दयानन्द के सभी ग्रन्थों में स्तुति-प्रार्थना-ध्यान-उपासना के सभी प्रसंगों को ध्यान से देखकर उसे अपनी स्मृति में स्थापित करना चाहिए और तदवत् आचरण करना उपासक व योगियों को ईश्वर को प्राप्त करने के लिए उपासना करते समय कण्ठ के नीचे, दोनों स्तनों के बीच में और उदर से ऊपर जो हृदय देश है, जिसको ब्रह्मपुर अर्थात् परमेश्वर का नगर कहते हैं, उसके बीच में जो गर्त है, उसमें कमल के आकार का वेश्म अर्थात् अवकाश रूप एक स्थान है और इसके बीच में जो सर्वशक्तिमान् परमात्मा बाहर भीतर एकरस होकर भर रहा है, यह आनन्दस्वरूप परमेश्वर उसी प्रकाशित स्थान के बीच में खोज करने से मिल जाता है। दूसरा उसके मिलने का कोई उत्तम स्थान व मार्ग नहीं है। यह शब्द महर्षि दयानन्द ने स्वानुभूति के आधार पर लिखे हैं। तर्क से भी यह सत्य सिद्ध हैं। अतः उपासक को इस प्रकार से उपासना करनी चाहिए जिसका परिणाम शुभ होगा और सफलता भी अवश्य यह भी विचारणीय है कि सभी मत मतान्तरों के अनुयायी भिन्न-भिन्न प्रकार से उपासना व पूजा आदि करते हैं। क्या उन्हें ईश्वर की प्राप्ति होती है व नहीं ? विचार करने पर हमें लगता है कि उससे लाभ नहीं होता, जो लाभ होता है, वह उनके पुरुषार्थ तथा प्रारब्ध से होता है। ईश्वर के यथार्थ ज्ञान तथा योग दर्शन की विधि से उपासना किए बिना किसी को ईश्वर की प्राप्ति व धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की सिद्धि प्राप्त नहीं होती, यह स्वाध्याय व चिन्तन से स्पष्ट होता है। अतः ईश्वर की प्राप्ति के लिए सभी को वैदिक धर्म व वैदिक उपासना पद्धति का ही आश्रय लेना उचित है। यही ईश्वर प्राप्ति की एकमात्र सरल विधि है। अन्य प्रकार से उपासना से ईश्वर प्राप्ति सम्भव नहीं है।

वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज मन्दिर, आर्य समाज चौंक पटियाला में दिनांक 14 अक्तूबर 2015 से 18 अक्तूबर 2015 तक वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन किया जा रहा है। यह कार्यक्रम प्रातः 8:30 से11:00 बजे तक तथा सांय 7:30 से 9:30 तक होगा। रविवार 18 अक्तूबर को कार्यक्रम का 8:30 से 12:30 बजे तक यज्ञ की पूर्णाहुति के साथ समापन होगा! इस अवसर पर आचार्य हरिशंकर जी अग्निहोत्री आगरा वाले, डा. वीरेन्द्र जी विद्यालंकार पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ, पूज्य स्वामी ब्रह्मवेश जी, श्री अरूण कुमार भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, आचार्य विजेन्द्र शास्त्री प्रचार मन्त्री उपस्थित होंगे। आप सभी सपरिवार इष्ट मित्रों सहित कार्यक्रम में पधार कर पुण्य लाभ प्राप्त करें। **मन्त्री आर्य समाज चौक पटियाला**

गुरूकुल करतारपुर का वार्षिक उत्सव

श्री गुरू विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट करतारपुर का 49 वां एवं श्री गुरू विरजानन्द गुरूकुल महाविद्यालय करतारपुर का 45 वां वार्षिक महोत्सव 12 अक्तूबर 2015 से 18 अक्तूबर 2015 तक बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस अवसर पर ~~सामवेद~~ पारायण यज्ञ किया जाएगा। यज्ञ के ब्रह्मा महात्मा चैतन्यमुनि जी सुन्दरनगर होंगे। भजन संगीत गुरुकुल करतारपुर के ब्रह्मचारियों द्वारा किया जाएगा। इस कार्यक्रम में कई गणमान्य नेता, महानुभाव तथा विद्वान पधार रहे हैं। आप सभी धर्मप्रेमी सज्जन सपरिवार एवं इष्ट मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं। कृपया उत्सव में पधार कर अनुगृहीत करें।

–महामन्त्री गुरूकुल करतारपुर

शोक समाचार

आर्य समाज मन्दिर बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर के प्रधान श्री ओम प्रकाश भाटिया जी की धर्मपत्नी श्रीमती उषा रानी भाटिया का गत दिनों देहान्त हो गया। श्रीमी उषा रानी भाटिया आर्य विचारों से ओतप्रोत महिला थी। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ऐसे पवित्र विचारों वाली, धार्मिक वृत्ति वाली महिला को अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करती है तथा प्रार्थना करते हैं कि परमात्मा दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें। **-महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब**

श्री राम पथिक वानप्रस्थी जी नहीं रहे

आर्य समाज को अपना जीवन समर्पित करने वाले श्री राम पथिक जी वानप्रस्थी वैदिक साधना आश्रम पंजौड़ जिला होशियारपुर वाले को देहान्त दिनांक 20-09-2015 को छुटमुलपुर जिला सहारनपुर में हो गया। श्री राम पथिक जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज के प्रति समर्पित कर दिया। छोटी-छोटी किताबें छपवाकर वे आर्य समाज का प्रचार-प्रसार करते थे। वह अपने आप में एक चलती फिरती आर्य समाज थे। ऐसी पवित्र आत्मा की शांति एवं सद्गति के लिए हम सभी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं। **-शादी लाल महेन्दु सभा मंत्री**

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक निर्वाचन सम्पन्न

सम्बलपुर गत 2 अगस्त, 2015 को आर्य समाज सम्बलपुर के विशाल सभागार में बहुत शांत वातावरण में लगभग 300 आर्य समाजों के 400 से अधिक प्रतिनिधियों की उपस्थिति में सभा के प्रधान एवं गुरुकुल आश्रम आमसेना के संचालक पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में प्रतिनिधि सभा के चुनाव निर्वाचन अधिकारी श्री धुनर्धर महापात्र ने निर्विघ्नरूप से चुनाव सम्पन्न कराया। निर्वाचन सर्वसम्मति से इस प्रकार हुआ।

प्रधान-पूज्य स्वामी धर्मानन्द सरस्वती

मन्त्री-श्री वीरेन्द्र कुमरा जी पण्डा

कोषाध्यक्ष-श्री गोपाल दास जी रावल

-आर्य रणजीत विवित्सु

रंगबिरंगे दोहे

-ले० मोहन उपाध्याय

1. हाथ खोल क्या देखता ? नहीं भाग्य की रेख,
   परिश्रम में, पुरुषार्थ में, भरा कर्मफल देख।
2. शक्ति भरी है सत्य में, जिसकी होती जीत,
   जिसे सफलता चाहिए, करे सत्य से प्रीत।
3. सबसे बड़ा चरित्र है, बिन चरित्र सब धूल,
   जब चरित्र है पास में, खिलें मार्ग में फूल।
4. अंधकार को चीर कर, आता दिव्य प्रकाश,
   हटते ही अज्ञान के, जीवन का विश्वास।
5. सत्य न्याय ही श्रेष्ठ हैं, भला सभी का होय,
   जब जीवन सबका सुखी, फिर क्या कोई रोय ?
6. पद पैसे की चाह में, बन जाते हैं दास,
   स्वाभिमान फिर है कहां ? और घटे विश्वास।
7. दास इंद्रियों के रहें, फिर क्या बेड़ा पार ?
   छेद नाव में, जस भरे, क्या वह तारनहार ?
8. पैसों में बिकते नहीं, जो हैं अच्छे लोग,
   चरित बड़ा अनमोल है, क्रय न कर सकें भोग।
9. जो टुकड़ों में सोचता, टुकड़ों में फल खाय,
   जो समग्र चिंतन करे, वह पूरा फल पाय।
10. कथनी करनी भिन्न हैं, कैसे पड़े प्रभाव ?
    बिना तपे कैसे तवा, दे सकता है ताव।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व पर सत्संग सभा

उदयपुर/आर्य समाज हिरण मगरी की ओर से श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व उपलक्ष्य में सत्संग सभा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमद् ̄ ानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. अशोक आर्य ने की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में कहा कि ''धर्म की गति अति सूक्ष्म है। धर्म कभी बंधन में नहीं बांधता, अपितु मुक्त करता है। श्रीकृष्ण हमेशा राष्ट्र मानव धर्म के पक्ष में खड़े रहे। अधर्म का प्रतिकार करते हुए धर्म की स्थापना की।'' मुख्य वक्ता के रूप में श्री सत्य प्रिय शास्त्री ने श्री कृष्ण को विश्व का सबसे चर्चित व्यक्तित्व बताया। उन्होंने कहा कि ''श्री कृष्ण मन, वचन, कर्म तीनों से एकमत रहे व जीवन में कभी धर्म मार्ग से विचलित नहीं हुए।'' वर्तमान में श्रीकृष्ण के माखनचोर आदि विकृत स्वरूप पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि संसार के सामने श्री कृष्ण के सच्चे स्वरूप को बताने की आवश्यकता है।

पूर्व में पंडित रामदयाल जी के पौरोहित्य में पर्व का विशेष यज्ञ सम्पन्न हुआ। डॉ० अमृत लाल तापडिया, श्रीमती विमला तापडिया, श्रीमती चन्द्रकांता यादव, श्री कृष्ण कुमार सोनी, श्रीमती चन्द्र कला आर्य यजमान थे। कार्यक्रम का संचालन श्री भूपेन्द्र शर्मा ने किया। श्रीमती राधा त्रिवेदी ने भजन प्रस्तुत किया। आर्य समाज की मंत्री श्रीमती ललिता मेहरा ने स्वागत एवं प्रधान श्री भंवर लाल आर्य ने आभार व्यक्त किया।

ऋग्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

उदयपुर/आर्य समाज हिरण मगरी, उदयपुर की ओर से दिनांक 23 अग्सत से 30 अगस्त, 2015 तक ऋग्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया कया। महायज्ञ के ब्रह्मा सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान आचार्य डॉ. सोमदेव शास्त्री थे। आर्य कन्या गुरुकुल सासनी हाथरस (उ. प्र.) की अधिष्ठाता डॉ. पवित्रा ब्रह्मचारिणियां विपाशा आर्या, सोनम, मनीषा, ललितेश आर्या द्वारा सस्वर वेद पाठ एवं भजन प्रस्तुत किए। सायं सत्रों में श्री इन्द्र देव पीयूष ने भी भजन प्रस्तुत किए।

प्रतिदिन यज्ञोपरान्त सत्संग सभा में यज्ञ के ब्रह्मा डॉ. सोमदेव शास्त्री ने वेद, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, गीता आदि ग्रंथों के उद्धरण देते हुए उपदेश दिए। आपने कहा कि हमारा जीवन यज्ञमय एवं परोपकारी होना चाहिए। वेद केवल एक समाज, धर्म अथवा मजहब के ग्रंथ नहीं हैं किन्तु संसार को संचालित करने के लिए दिया ईश्वरीय ज्ञान है। जीवन में कभी स्वाध्याय एवं सत्संग से प्रमाद न करें। सत्संग एवं ईश्वरीय आराधना से जीवन का मार्जन होता है। जैसे मकान, बर्तनों को नियमित साफ करते हैं वैसे ही जीवन को स्वच्छ एवं निर्मल रखने के लिए नियमित सत्संग एवं ईश्वर आराधना करनी चाहिए। डॉ. पवित्रा जी ने ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव, स्वरूप को व्याख्यायीत करते हुए कहा कि परमात्मा सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार पक्षपात रहित सबको अपने कर्मों के अनुसार निष्पक्ष फल प्रदान करता है। परमात्मा का स्वभाव अविनाशी है। परमात्मा की आज्ञा का पालन करना ही धर्म है।

परायण यज्ञ प्रात: सायं कालीन कुल पन्द्रह सत्रों में साठ प्रमुख यजमानों के अतिरिक्त पूर्णाहुति के दिन उपस्थित सभी यज्ञप्रेमी बन्धुओं और मातृशक्ति ने आहुतियां प्रदान की। सभी सत्रों में यज्ञोपरान्त सम्पन्न धर्म सभा में कोटा विश्वविद्यालय, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के वर्तमान एवं पूर्व कुलपति, मोहनलाल सुखाडिया विश्व विद्यालय के अनेकों आचार्य, प्रोफैसर इंजीनियर्स प्राध्यापक आदि प्रमुख विशिष्ट अतिथि रहें। आर्य समाज हिरण मगरी की संरक्षक डॉ. अमृतलाल तापड़िया ने यज्ञ आयोजन में प्रमुख भूमिका निभाई और समापन सत्र में आर्य समाज हिरण मगरी की गतिविधियों एवं इतिहास पर प्रकाश डाला। संयोजिका डॉ. श्रीमती शारदा गुप्त, उप प्रधान अनन्त देव शर्मा, उपमंत्री मुकेश पाठक, कोषाध्यक्ष प्रेम नारायण जायसवाल, रामदयाल, दिनेश अग्रवाल, विनोद कोहली आदि ने अतिथियों का स्वागत किया एवं मंत्री श्रीमती ललिता मेहरा ने धन्यवाद किया। सत्र की अध्यक्षता समाज के प्रधान भंवरलाल आर्य ने की। संचालन भूपेन्द्र शर्मा ने किया।

वेदवाणी

विविध युद्धों में मुख्य रक्षक और सहायक परमेश्वर

यमग्ने पृत्सु मर्त्यमवा वाजेषु यं जुनाः।
स यन्ता शश्वतीरिषः।। -ऋ० १।२७।७

ऋषिः-आजीगर्तिः शुनःशेपः।। **देवता**-अग्निः। **छन्द**-गायत्री।

विनय-इस संसार में मनुष्य को प्रत्येक अभीष्ट फल पाने के लिए लड़ाईयां लड़नी पड़ती हैं। संसार में नाना प्रकार के संघर्ष चल रहे हैं। हे प्रभो! जिस मनुष्य की तुम इन संग्रामों में रक्षा करते हो, अर्थात् जिस तुम्हारे अनन्य भक्त को सदा तुम्हारी सहायता मिलती रहती है, उस मनुष्य को नित्य अक्षय अन्न प्राप्त होते हैं। उसे रोटी के सवाल के लिए कोई लड़ाई नहीं लड़नी पड़ती। वह इससे निश्चिन्त हो जाता है क्योंकि उसे एक नित्य अन्न मिल जाता है, जिससे वह सदा ही तृप्त बना रहता है। वह जानता है कि जिसे तूने यह शरीर दिया है और जो तू उसके इस शरीर की नाना प्रकार से रक्षा कर रहा है, वही तू उसके शरीर की भी स्वयं चिंता करेगा, नहीं तो शरीर को ही वापिस ले लेगा। वह जानता है कि अपने भक्तों के प्रति उसकी यह प्रतिज्ञा है। ''तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।'' भक्तों के योगक्षेम करने की चिन्ता तूने अपने ऊपर ले रखी है। बस, यही ज्ञान है जिसके कारण वे निश्चिन्त रहते हैं-तृप्त रहते हैं। यही ज्ञान ''नित्य अन्न'' है। यह रोटी का अन्न तो अनित्य है। आज खाते हैं, कल फिर भूख लग आती है। इससे नित्य तृप्ति प्राप्त नहीं होती, परन्तु उस आत्मज्ञान को प्राप्त करके वे सदा के लिए तृप्त हो जाते हैं। वे इसी आत्मज्ञान पर जीते हैं, रोटी पर नहीं जीते, अतएव रोटी न मिलने पर (शरीर छूटने पर) वे मरते भी नहीं, वे अमर हो चुके होते हैं। हम लोग रोटी पर ही जीते हैं और रोटी न मिलने पर मर जाते हैं। इस अनित्य अन्न (रोटी) के हमेशा मिलते रहने का प्रबन्ध करके यदि इसे नित्य बनाने का यत्न किया जाए तो भी यह नित्य नहीं बनता, नित्य तृप्तिकारक नहीं रहता, क्योंकि हमेशा अन्न मिलते रहने पर भी यह शरीर एक दिन बुड्ढा होकर छूट ही जाता है। रोटी उस समय उसकी तृप्ति व रक्षा नहीं कर सकती, अतः नित्य-अन्न तो ज्ञानतृप्ति ही है। हे परमेश्वर! इस युद्धमय संसार में तुम जिसके सहायक होते हो उसे यह शाश्वत् अन्न देकर इस शाश्वत् 'इष्' का स्वामी बनाकर-उसे अमर भी कर देते हो। -**वैदिक विनय से साभार**

महर्षि दयानन्द होमियोपैथिक चिकित्सालय का उद्घाटन

आर्य समाज अबोहर में 20.9.2015 को बड़ी ही श्रद्धा भक्ति से, आर्य समाज के छठे नियम को चरितार्थ करने के लिए आम लोगों को रोगों से बचाने के लिए ''महर्षि दयानन्द होमियोपैथिक चिकित्सालय'' का उद्घाटन किया गया। जिसमें प्रातः 9 बजे से 10 बजे तक संध्या हवन तथा 10 बजे डा. सुशील रत्न मिगलानी तथा श्रीमती सरोज मिगलानी पवित्र दम्पत्ति के शुभ हाथों से उद्घाटन हुआ। साथ उपस्थित रहे डा. विशाल तनेजा जिनके देख-रेख में चिकित्सालय खुला। डा० अमृत मौर्य, जो रोगियों का निदान करेंगे और आर्य समाज के प्रधान श्री सोहन लाल सेतिया जी, महामंत्री श्री सुशील मेहता जी संजीव सेतिया, अनुराग असीजा, रजनीश बजाज, प्रदीप गांधी, मुरारी लाल दावड़ा, सभी आर्य समाज के सदस्यगण, स्त्री आर्य समाज के सदस्यगण और भी आर्य सज्जन उपस्थित रहे। पश्चात् पंडित अशोक शर्मा मंच संचालक के अनुसार स्वागत सम्मान तथा महामंत्री सुशील मेहता द्वारा भजन और डा. विशाल तनेजा भाषण तथा डा. सुशील रत्न मिगलानी जी का भाषण फिर शांतिपाठ और ऋषि लंगर के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

रक्त दान शिविर का आयोजन

गुरू विरजानन्द गुरूकुल महाविद्यालय करतारपुर द्वारा आयोजित रक्तदान शिविर का शुभारम्भ 11 अक्तूबर 2015 रविवार प्रातः 9:00 बजे श्री बलराम दास टंडन जी महामहिम राज्यपाल, छत्तीसगढ़ की अध्यक्षता में होगा। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री कृष्ण देव भण्डारी मुख्य संसदीय सचिव, पंजाब सरकार तथा विशिष्ट अतिथि डॉ. कुंवर विजय प्रताप जी डी. आई. जी. पंजाब पुलिस होंगे। आपकी उपस्थिति अनिवार्य है। -**महामन्त्री गुरूकुल करतारपुर**

गुरूकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे, मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।